Date – 09/07/2020

Dr. Sanchlata
Asst. Professor (Guest faculty)
Dept. of Philosophy
Women's college, Samastipur
Email Id. – Snehababli 1987 @ gmail.com
Cont. no. – 8409587640

Class – B.A. – II (Hons.)

Topic – Difference between Deductive and Inductive logic.

Scanned with CamScanner

निगमनात्मक और आगमनात्मक तर्कशास्त्र में भेद।

तर्कशास्त्र के अन्तर्गत विभिन्न तर्कशास्त्रियों ने प्रमुख रूप से दो सिद्धान्तों अथवा विधियों को स्वीकार किया है। ये विधियाँ निगमनात्मक और आगमनात्मक के नाम से जानी जाती हैं। निगमनात्मक तर्कशास्त्र को प्रामाणिक तर्कशास्त्र और आगमनात्मक तर्कशास्त्र को सम्भाव्य तर्कशास्त्र भी कहा जाता है। इन दोनों में मुख्य भेद निम्नलिखित हैं

निगमनात्मक तर्कशास्त्र	आगमनात्मक तर्कशास्त्र
* इसके अन्तर्गत पूर्व में वर्णित तथा निर्णीत किसी सिद्धान्त अथवा सामान्य सत्य से तर्क द्वारा अज्ञात सत्य को प्रमाणित किया जाता है।	इसके अन्तर्गत अज्ञात सत्य से ज्ञात सत्य को प्रमाणित किया जाता है।
* निगमन द्वारा प्राप्त वाक्य प्रामाणिक होते हैं, क्योंकि इसके आधार-वाक्य निष्कर्ष की प्राप्ति के लिए पर्याप्त आधार प्रस्तुत करते हैं।	आगमन द्वारा प्राप्त वाक्य सम्भाव्य होते हैं, क्योंकि आगमन में आधार-वाक्य, निष्कर्षों की प्राप्ति के लिए पर्याप्त आधार प्रस्तुत करने का कोई दावा प्रस्तुत नहीं करते हैं।
* अरस्तू ने इस पद्धति को व्यवस्थित रूप प्रदान किया है।	बेकन ने इस पद्धति को व्यवस्थित रूप प्रदान किया है।
* निगमन तर्कशास्त्र सिद्धान्त केन्द्रित होता है।	आगमन तर्कशास्त्र वस्तु केन्द्रित होता है।

Scanned with CamScanner

* इसमें सामान्य सिद्धान्त से विशेष तथ्य की ओर आकर उसके गुणों का परीक्षण किया जाता है।	इसमें विशेष वस्तुओं के गुणों के आधार पर सामान्य सिद्धान्तों की प्राप्ति की जाती है।
* निगमन पद्धति में अनुमान को साधन के रूप में प्रयोग करके निष्कर्षों की प्राप्ति की जाती है।	आगमन पद्धति में केवल तथ्यों को आधार बनाकर निष्कर्षों की प्राप्ति की जाती है।
* निगमन पद्धति में सैद्धान्तिक कथनों को आधार स्वीकार करके उसके सापेक्ष रूप में अन्य तथ्यों की सत्यता को प्रामाणिक या अप्रमाणिक सिद्ध किया जाता है।	आगमन पद्धति में वस्तुओं का परीक्षण करके उसके सापेक्ष रूप में अन्य तथ्यों को प्रामाणिक अथवा सामान्य स्वीकार करने का प्रयास किया जाता है।
* इसका प्रयोग दर्शन या गणित के क्षेत्र में मुख्य रूप से किया जाता है।	इसका प्रयोग वैज्ञानिक बोध के क्षेत्र में मुख्य रूप से किया जाता है।
* उदाहरण सभी मनुष्य मरणशील हैं। राकेश मनुष्य है। अतः राकेश मरणशील है।	उदाहरण राकेश मरणशील है। राम मरणशील है। मोहन मरणशील है। अतः मनुष्य मरणशील है।

Scanned with CamScanner